प्रथम अध्याय

"साहित्यकार सुरेंद्र वर्मा का संक्षिप्त परिचय"

प्रथम अध्याय

''साहित्यकार सुरेंद्र वर्मा का संक्षिप्त परिचय''

विषय प्रवेश :

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व मूलत: एक अबूझ पहेली होता है। व्यक्ति के निर्माण में पारिवारिक के साथ-साथ सामाजिक परिवेश की भूमिका भी अहम स्थान रखती है। मूलत: साहित्यकार पहले एक व्यक्ति है और बाद में लेखक या कलाकार। यही कारण है कि कलाकार अपनी अतिरिक्त संवेदनशीलता के कारण आम लोगों से भिन्न होता है। ''कलाकार का विशिष्ट व्यक्तित्व उसकी संवेदना ग्रहण पद्धति के कारण ही साधारण मनुष्य के व्यक्तित्व से अलग पड़ जाता है।''[1] स्पष्ट है कि कलाकार की पहचान उसकी संवेदनशीलता से होती है।

साहित्य का सृजन जाने-अनजाने में रचनाकार के व्यक्तित्व से गहरा ताल्लुक रखता है। इसी कारण किसी भी साहित्यकार के कृतित्व का अध्ययन करते हुए उसके व्यक्तित्व का अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण होता है। लेखक कभी-कभी अपनी प्रतिभाशक्ति से जीवन के अनुभवों को समेटकर, तो कभी लोगों के जीवन से प्रभावित होकर सत्य-काल्पनिक, प्राचीन-आधुनिक घटनाओं को साकार रूप में परिणत करने का सफल प्रयास अपने साहित्य के माध्यम से करता है। डॉ. विवेक द्विवेदी के शब्दों में - ''साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब ही उसकी रचनाधर्मिता में दिखाई देता है। रचनाकार जो कुछ करता है, रचना की पृष्ठभूमि उसी से निर्मित होती है और वाणी उसे शब्द देकर प्रवाह में बदल देती है।''[2] अत: कहना सही होगा कि रचनाकार के आंतरिक व्यक्तित्व को जानने के लिए उनकी रचनाएँ महत्त्वपूर्ण होती है।

लेखक प्रतिभाशाली तथा सृजनशील होते हैं जिसके बलबूते पर सर्वसामान्य जनता भी उससे परिचित ही नहीं रहती बल्कि प्रभावित हो उठती है। उससे कहीं न कहीं पर अपना अस्तित्व नजर आता है। कभी जीवन की सच्चाई को पढ़कर तो कभी आँखों से देखकर प्रभावित होते हैं। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके कई

---

1. डॉ. भगवानदास वर्मा - कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग, पृष्ठ - 70
2. डॉ. विवेक द्विवेदी - भीष्म साहनी : उपन्यास साहित्य, पृष्ठ - 15

पहलू उजागर करने का साधन है। डॉ. किशोर गिडकर के शब्दों में - ''साहित्यकार को जानने का माध्यम केवल साक्षात्कार और व्यक्तिगत परिचय नहीं होता, अपितु उसकी रचनाएँ भी एक सफल साधन का काम करती है। तो उसके जीवन परिचय के बारे में ज्ञान होना आवश्यक गर्भीत होता है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट है जैसे-जैसे व्यक्ति के साथ हमारा संबंध बढ़ जाता है, वैसे-वैसे उसके गुण-दोष, व्यक्तित्व के सूक्ष्माति-सूक्ष्म पहलू उद्घाटित होते हैं और हम उसके आंतरिक व्यक्तित्व से परिचित होते हैं।

सुरेंद्र वर्मा जी ने अपने समकालीन साहित्यकारों में अपनी विशिष्ट संवेदना और मौलिक अभिव्यक्ति के कारण एक अलग पहचान बनाई है। उन्होंने तत्कालीन समय की ज्वलंत समस्याओं को अपने साहित्य का विषय ही नहीं बनाया बल्कि उस पर नये ढंग से विचार भी किया है। सामाजिक पारिवारिक जीवन की विशृंखलित स्थितियों को उन्होंने नये संदर्भों में देखा है। उन्होंने नारी-पुरुष संबंध, प्रेम तथा विवाह आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है। यही वजह है कि उनके लेखन में एक ताजगी है और एक नयापन भी। युगबोध की तिथि चेतना से संपन्न होने के साथ-साथ ही अपना विशिष्ट जीवन-दर्शन भी उनकी रचनाओं में रूपायित हुआ है। उन्होंने तत्कालीन प्रश्नों के साथ-साथ सार्वकालिक प्रश्नों को अपने साहित्य के माध्यम से वाणी दी है। जीवन के हर अनुभव को उन्होंने बड़ी सच्चाई और ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है।

सुरेंद्र वर्मा द्वारा लिखित साहित्य हिंदी साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है। लेखक द्वारा बेजोड़ साहित्य का निर्माण तभी होता है, जब उसे विषय का सूक्ष्म एवं गहरा अध्ययन होता है। इसी कारण हम सुरेंद्र वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानना अनिवार्य समझते हैं। किसी रचनाकार का व्यक्तित्व उनके कृतित्व को समझने के लिए सहायक सिद्ध होता है।

---

1. डॉ. किशोर गिरडकर - मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य, पृष्ठ - 1

1.1 व्यक्तित्व :

किसी भी साहित्यकार को जानने, पहचानने के लिए उसके व्यक्तित्व को जानना बहुत जरूरी है। क्योंकि उसके व्यक्तित्व की झलक उसके साहित्य में प्राप्त होती है। नालंदा विशाल शब्दसागर में व्यक्तित्व का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि हर एक के पास वह गुण होता है जिसके कारण उसकी अपनी एक अलग प्रतिभा निर्माण होती है। साहित्यकार के जीवन का निर्माण उसके पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश में होता है। इसीलिए साहित्यकार के साहित्य में उसका अपना जीवनानुभव दिखाई देता है। वह जीवन के सुख-दुःख तथा मधुर-कटु अनुभवों को अपनी कल्पनाओं में संजोग कर साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। डॉ. सरोज मार्कण्डेय के मतानुसार - ''किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएव व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है। व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचयात्मक नहीं अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं, मानसिक, सांस्कृतिक पूँजीभूत रूप है।''[2] इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की पहचान उसका व्यक्तित्व है। व्यक्ति की विशेषताएँ हमें उनके परिवेश तथा जीवन से ज्ञात होती है।

1.1.1 जन्म -

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखने वाले नाटककार एवं कथाकार सुरेंद्र वर्मा का जन्म 7 सितंबर, 1941 में हुआ है।

1.1.2 शिक्षा -

सुरेंद्र वर्मा जी ने भाषा विज्ञान में एम्.ए. किया है। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, रंगमंच तथा फिल्मों में भी उनकी गहरी रुचि रही है।

---

1. सं. श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 1309
2. डॉ. सरोज मार्कंडेय - निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ, पृष्ठ - 12

1.1.3 नौकरी –

सुरेंद्र वर्मा जी अध्यापकीय एवं प्रशासकीय कार्य में कार्यरत हैं।

1.1.4 कलाओं में रुचि –

सुरेंद्र वर्मा जी को रंगमंच, फिल्म लाइन और इतिहास में विशेष दिलचस्पी है।

1.1.5 साहित्य लेखन में विविधता –

वर्मा जी की एकांकी और अन्य साहित्यिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने नाटकों के अतिरिक्त कविता-संग्रह, कहानी-संग्रह, व्यंग्य, रूपांतर, उपन्यास, लेख, समीक्षा आदि साहित्यिक विधा में अपनी कलम चलाई है। साथ ही गाँधी जी के विचारों पर पुस्तक भी लिखी है।

1.1.6 पुरस्कार –

सुरेंद्र वर्मा जी को अब तक केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी तथा भारतीय भाषा परिषद द्वारा सम्मानित किया है।

1.2 सुरेंद्र वर्मा के व्यक्तित्व के विविध पहलू :

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन करने के पूर्व उसके व्यक्तित्व से परिचित होना आवश्यक हो जाता है। व्यक्तित्व के अध्ययन के बिना साहित्यकार का अध्ययन अधूरा माना जाता है। साहित्यकार जिस वातावरण में पला, बढ़ा है उसका प्रभाव निश्चित ही उसके साहित्य पर दिखाई देता है। व्यक्ति के आचार-विचार, व्यवहार, क्रियाओं तथा गतिविधियों में उसका व्यक्तित्व झलकता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का सीधा प्रभाव उसके कृतित्व पर पड़ता है।

कुछ साहित्यकार अपनी रचनाओं के बल पर चर्चा के केंद्र में रहते हैं, तो कुछ अपने व्यक्तित्व के बलबूते पर। लेकिन कई साहित्यकार ऐसे भी होते हैं जिनका कृतित्व और व्यक्तित्व दोनों ही चर्चा के केंद्र बिंदु बने रहते हैं। सुरेंद्र वर्मा जी

ठीक इसी तरह के साहित्यकार हैं। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का यहाँ विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत है -

1.2.1 साहित्यकार के रूप में अलग पहचान -

सुरेंद्र वर्मा हिंदी साहित्य जगत् में समकालीन लेखकों में अपनी अलग पहचान रखते हैं। रूग्ण मान्यताओं के प्रति विद्रोह, स्वस्थ आधुनिक दृष्टिकोण, नष्ट होते पारंपरिक मूल्यों की स्थापना और नारी आदि उनके साहित्यिक धरोहर हैं। वे नारी को अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने की सलाह देते हैं जिनमें उनकी उन्नति होती है। उन्होंने जो लेखन किया है वह किसी विशिष्ट हेतु से न कर इन्सान तथा समाज सुधार के लिए किया है। अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा सामाजिक चेतना के नित नए आयामों का उद्घाटन ही उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है। नारी का अंतरद्वंद्व उसकी पीड़ा, दु:ख, दर्द को चित्रित कर नारी मुक्ति की पुरोजोर हिमायत की है। साथ ही नारी मन तथा नारी जीवन का चित्रण गहराई से किया है। इससे स्पष्ट होता है कि सुरेंद्र वर्मा ने साहित्यकार के रूप में अपनी एक अलग पहचान बना ली है।

1.2.2 नारी स्वतंत्रता के समर्थक -

सुरेंद्र वर्मा नारी स्वतंत्रता के समर्थक हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन को स्पष्ट करते हुए उसके स्वतंत्रता की हिमायत की है। वे नारी को हर क्षेत्र में कार्यरत दिखाना चाहते हैं। साथ ही स्त्री को पारंपरिक बंधन की जकड़न से मुक्ति दिलाना चाहते हैं। उनके उपन्यासों में चित्रित कई नारी पात्र नारी स्वतंत्रता की माँग करते हैं। वे नारी के दायित्वहीन स्वतंत्रता के विरोधक हैं। क्योंकि दायित्वहीन स्वतंत्रता नारी को उच्छृंखल बनाती है। वर्मा जी को नारी स्वातंत्र्य में अपना अलग अस्तित्व निर्माण करने वाली नारी अपेक्षित है। इसका प्रमाण 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास है। इससे स्पष्ट होता है कि सुरेंद्र वर्मा नारी स्वतंत्रता के समर्थक हैं। उनके साहित्य में ठीक यही बात स्थान-स्थान पर ध्वनित होती है।

1.2.3 आत्म-प्रचार से रहित -

वस्तुत: सुरेंद्र वर्मा के जीवन पर कोई विशेष सामग्री प्रकाशित नहीं है। कुछ सामग्री जुटाने का प्रयत्न मैंने उनसे पत्रव्यवहार करके किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। भेजे गए पत्र में से किसी का उत्तर देना उन्होंने उचित नहीं समझा। वे अपने बारे में अधिक कुछ न लिखना चाहते हैं और न बताना भी, लेकिन जीवन को समझने के लिए उपन्यास और नाटक पर्याप्त लगते हैं। एक बात हमें स्वीकारनी होगी कि वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी देने के मोह से रहित है। कहना सही होगा कि लेखक आत्म-प्रचार से रहित परिलक्षित होते हैं।

1.2.4 स्पष्टवादी -

मूलत: सुरेंद्र वर्मा स्पष्टवादी लेखक हैं। उन्होंने अपने जीवन में स्पष्टवादिता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। वे झूठ, मक्कारी, धोखाधड़ी आदि से नफरत करते हैं। सच्ची तथा सीधी बात करना अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। वे स्वानुभव और ईमानदारी से जो महसूस करते हैं वही कह देते हैं। स्वयं उनके शब्दों में - "मैं उन्हीं चीजों के बारे में लिख सकता हूँ, जो मुझे उद्वेलित करती हैं। वह किसके लिए हैं - ये जानना मेरे लिए मुश्किल है . . . शायद ये उतना महत्त्वपूर्ण भी नहीं है।"[1] प्रस्तुत कथन से सुरेंद्र वर्मा की स्पष्टवादी वृत्ति दृष्टिगोचर होती है। किसी बात को स्पष्ट कहने में उनको तनिक भी हिचकिचाहट महसूस नहीं होती। कहना सही होगा कि स्पष्टवादी वृत्ति उनके जीवन का अभिन्न अंग है।

1.2.5 प्रतिभासंपन्न -

सुरेंद्र वर्मा एक प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। यह बात उनकी निरंतर साहित्य साधन एवं सर्जन से दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने साहित्य के सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा साहित्य का एक भी पक्ष अछूता नहीं छोड़ा है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। ऐसी प्रतिभा संपन्नता कुछ ही साहित्यकारों में पायी जाती है। जिसका मूर्तिमंत उदाहरण सुरेंद्र वर्मा जी हैं।

---

1. तनेजा जयदेव - समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, पृष्ठ - 165

1.2.6 महानगरीय जीवन से गहरा संबंध –

सुरेंद्र वर्मा जी आज मुंबई महानगर में रहते हैं। महानगर की जिंदगी उनके जीवन का अभिन्न अंग है। मुंबई की महँगी जिंदगी अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए वे जी रहे हैं। महानगर की जिंदगी में वक्त की पाबंदी अनिवार्य बात है। सुरेंद्र वर्मा भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं।

आज-कल लेखन ही उनकी जीविका का प्रमुख साधन है। वे अपने जीवन के अनेक अनुभवों से न केवल परिचित हैं बल्कि प्रभावित भी रहे हैं। समय पर पारिश्रमिक न मिलने के कारण प्रकाशकों के प्रति उनका आक्रोश बढ़ता हुआ दिखाई देता है। इतना ही नहीं दूरभाष पर संपर्क स्थापित करने वालों को, ध्वनिमुद्रित संवादों की फटकार सुननी पडती है। यह एक संवेदनशील लेखक के व्यक्तिगत व्यवहार का अविस्मरणीय अनुभव है। इसी कारण अपने लेखन और महानगर की महँगी जिंदगी से जूझने वाला यह साहित्यकार, अनुसंधाताओं के लिए एक स्वतंत्र शोध का विषय बन गया है।

1.2.7 सृजनशील साहित्यकार –

सुरेंद्र वर्मा एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई है। सन् 1960 से लेकर अब तक के साहित्य निर्माण में नाटक, उपन्यास, एकांकी, कहानी-संग्रह, अनुवाद तथा व्यंग्य का भी सृजन किया है।

सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन के यथार्थ का साक्षात्कार करने का सफल प्रयास किया है। साथ ही सम-सामयिक युग की असंगतियों से संघर्ष में टूटते-बिखरते मनुष्य के मानसिक विघटन को ऐतिहासिक-पौराणिक संदर्भों के माध्यम से मुखरित किया है। उन्होंने वर्तमान युग की ज्वलंत समस्याओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया है।

सुरेंद्र वर्मा के स्त्री पात्र कई पुरुषों के साथ संबंध रखने के लिए विवश हैं। उनके द्वारा लिखा साहित्य समाज-जीवन की सच्चाई को अवगत कराता है।

साहित्य की विविध विधाओं के जरिए उन्होंने सृजनशील साहित्य का परिचय दिया है और हिंदी साहित्य के विकास में योगदान भी। अंततः कहना होगा कि समृद्ध जीवनानुभवों ने वर्मा जी को सृजनशील लेखक बनाया हैइसमें संदेह नहीं।

1.2.8 उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा –

सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों को पढ़ने के बाद कहा जा सकता है कि उन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध पहलुओं तथा संदर्भों की बड़ी बारीकी से जाँच-पडताल की है और अपनी संवेदना के रंगों में डुबोकर उसे बड़ी कलात्मकता से अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी जीवन की विसंगतियों को अपनी अंतर्भेदी दृष्टि से परखा है और विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश भी डाला है। उनके उपन्यासों में परंपरागत नैतिक मान्यताओं के अस्वीकार का स्वर भी सुनाई देता है।

1.2.9 नाटककार सुरेंद्र वर्मा –

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में और विशेष तौर से साठोत्तरी हिंदी नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा जी का विशेष स्थान है। उनका साहित्य नए प्रयोगों से प्रभावित होता दिखाई देता है। इसीलिए उनकी ख्याति एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में जानी जाती है। डॉ. मीना पंड्या के शब्दों में – ''नाटककार सुरेन्द्र वर्मा की दर्शकीय संवेदना को झकझोरने वाली आवेगप्राण, संप्रेषणक्षम, प्रभविष्णु रंगभाषा की निर्मिती में विभिन्न भाषिक कौशलों एवं भाषिक प्रकार्यों का समवेत योग है।''[1] अतः स्पष्ट है कि अपनी अलग पहचान बनाने के लिए भाषिक कौशल होना जरूरी है। हिंदी नाट्य परंपरा में सुरेंद्र वर्मा मोहन राकेश की अगली कड़ी कही जा सकती है जो उनकी ही परंपरा के संवाहक हैं। इतिहास-पुराण को युगानुकूल संगत क्रम में व्याख्यायित अथवा अतीत के प्रकाश में वर्तमान की समझ और भविष्य का संकेत देने वाले इन नाटकों की एक निश्चित परंपरा उनके नाट्य साहित्य में उपलब्ध है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में, प्रसाद से मोहन राकेश तक चली आ रही ऐतिहासिक तथा काव्यात्मक अभिव्यंजना का निर्वाह हुआ है। इतना ही नहीं रंगमंच

---

1. मीना पंड्या – सुरेंद्र वर्मा की नाट्यभाषा, मुखपृष्ठ

के क्षेत्र में अभिनव प्रयोगों द्वारा वर्मा जी नाटकों को सार्थक जीवंतता प्रदान करते हैं। सुरेंद्र वर्मा एक साथ नाटककार भी हैं और निर्देशक भी। अत: सुरेंद्र वर्मा बेहद कलात्मक, गंभीर तथा दृष्टि संपन्न नाटककार के निर्माता हैं।

1.3 कृतित्व अर्थात् साहित्य संसार :

बहुआयामी व्यक्तित्व के सुरेंद्र वर्मा जी का साहित्य भी बहुआयामी है। साहित्य की प्रत्येक विधा से उनकी सृजनता का परिचय हमें प्राप्त होता है। उन्होंने सन् 1960 से लेकर अब तक के साहित्य निर्माण में तीन उपन्यास, दो कहानी-संग्रह, दस नाटक तथा छ: एकांकियाँ लिखी हैं। उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जीवन के यथार्थ को उद्घाटित किया है और हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान भी बनाई है। जिन कृतियों के द्वारा उनकी पहचान है उन कृतियों का विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है-

1.3.1 उपन्यास साहित्य –

सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके उपन्यासों में महानगरीय जीवन का चित्रण अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्यिक जीवन में सिर्फ तीन ही उपन्यास लिखे हैं। उनके उपन्यासों का प्रकाशन क्रम के अनुसार संक्षिप्त विवरण-विश्लेषण –

1. अँधेरे से परे (1980)
2. मुझे चाँद चाहिए (1993)
3. दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता (1998)

वर्मा जी का उपन्यास साहित्य जीव-जगत्, परिस्थितियों, संस्कारों और तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति से प्रभावित दिखाई देता है।

(1) अँधेरे से परे :-

'अँधेरे से परे' प्रकाशन क्रम के अनुसार पहला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली प्रकाशन के द्वारा सन्

1993 में हुआ। यह एक समर्थ रचनाकार का अत्यंत सशक्त उपन्यास है। आज की मजबूर भागती हाँफती जिंदगीयों के आस-पास का बहुआयामी कथानक और पात्रों के भीतर बजती हुई गूँज एक महत्त्वपूर्ण सार्थक उपन्यास होने के लिए काफी है। इस उपन्यास के नायक का जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण बिल्कुल निराशाजनक लगता है। उनके जीवन में एकांत, उदासीनता तथा परिवार में कलह होने के कारण उसे अपना जीवन अँधेरे से भी ऊपर लगने लगता है। अत: अनेक प्रसंग एवं घटनाओं का विवरण होने के कारण साहित्य विश्व में प्रस्तुत उपन्यास ने अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

(2) मुझे चाँद चाहिए :-

'मुझे चाँद चाहिए' प्रकाशन क्रम के अनुसार दूसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन राधाकृष्ण प्रकाशन से सन् 1993 में हुआ। सुरेंद्र वर्मा ने अपने नए एवं महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' में चाँद के बहुआयामी एवं व्यंजनापूर्ण प्रयोग इतनी खूबसूरती से किए हैं कि कृति के सभी अंग-उपादान एवं दृष्टिकोण इसकी चाँद की छटा से आलोकित हो उठतें हैं। प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान है। इस उपन्यास की नायिका 'वर्षा वशिष्ठ' है। उसे अभिनय का बहुत बड़ा शौक है। अभिनय प्रेम और हर्ष प्रेम वर्षा वशिष्ठ की वे खुशियाँ या चाँद है जिसके लिए वह उपन्यास में जीवन जीती हुई नजर आती है। हर्ष की मृत्यु हो जाने पर वह कहती है - ''मेरे वास्ते चंद्रमा हमेशा के लिए बूझ गया है।''[1] अत: वर्षा हर्ष को अपने चाँद के रूप में देखती है। उसके पश्चात् वह जीना नहीं चाहती क्योंकि उसकी हमेशा एक ही माँग है - मुझे चाँद चाहिए।

(3) दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता :-

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' प्रकाशन क्रम के अनुसार तीसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन राधाकृष्ण प्रकाशन से सन् 1998 में हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास दो युवकों की कहानी है जो एक हादसे द्वारा एक दूसरे के करीब आए हैं जो एक-दूसरे के अच्छे दोस्त हैं। जिनके नाम हैं - नील और भोला। नील एक

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 547

शिक्षित युवक है तो भोला अनपढ़ है। बेकार युवकों का अर्थप्राप्ति के लिए बहकना, उपभोक्तावादी संस्कृति का योगदान स्पष्ट करना, पुरुष वेश्या पर चिंतन करना और महानगरीय यौन-संबंधों की विविधता का पर्दाफाश करनाआदि प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख घटनाएँ हैं जो चिंतन का ही नहीं बल्कि चिंता का विषय बन बैठी हैं । प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने महानगर की असलियत का परिचय दिया है। उपन्यास का नायक नील है और भोला जो जिंदा होकर भी मुर्दा है। महानगरीय जीवन ने दोनों को मुर्दा बनाया है। अत: इन्हीं दो युवकों या मुर्दों को आधार बनाकर 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' नामक उपन्यास में सुरेंद्र वर्मा एक नयी कथा के साथ उपस्थित होते हैं।

1.3.2 कहानी-संग्रह -

सुरेंद्र वर्मा का कहानी साहित्य उनके नाटक तथा उपन्यास की भाँति ही सफल एवं समृद्ध है। दृढ़ निश्चय, जूझारूपन और संघर्षशीलता की झलक उनकी कहानियों में सर्वत्र दिखाई देती है। उन्होंने अतीत, वर्तमान और आगत के चेहरे को पढ़कर उन्हें सँवारने का प्रयास किया है।

उनकी कहानियों का कथ्य बहुआयामी है। सुरेंद्र वर्मा जी ने जो महसूस किया है उसे अपने लेखन के माध्यम से प्रकट किया है। उनकी कहानियाँ कथ्यगत विविधता से ओतप्रोत दिखाई देती है। आज का इन्सान इसलिए विवश है कि उसे यातनामयी जीवन जीना पड़ता है। इसी प्रवृत्ति का चित्रण उनकी कहानियों में दिखाई देता है। उनकी सभी कहानियाँ उनके तीन कहानी-संग्रहों में संकलित है-

1. प्यार की बातें
2. कितना सुंदर जोड़ा और
3. नयी कहानियाँ आदि।

सुरेंद्र वर्मा की लगभग समग्र कहानियों में वर्तमान एवं ऐतिहासिक कालखंड के समाज जीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि वर्मा जी ने विविध विषयों पर कहानियाँ लिखी है।

1.3.3 कविता–संग्रह –

सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्यिक जीवन में बहुत कम कविताएँ लिखी हैं। प्राय: उपन्यास और नाटक विधा में ही उनकी रुचि अधिक दृष्टिगोचर होती है। कवि और उसके काव्य का विवेचन और मूल्यांकन कई स्तरों पर किया जा सकता है। हिंदी के आधुनिक युग के कुछ वरिष्ट कवियों की एक विशिष्ट मान रेखा हिंदी साहित्य में बन चुकी है। कवि सुरेंद्र वर्मा के काव्य के संबंध में भी युगीन समीक्षकों की प्रतिक्रियाएँ बहुत कुछ यही है कि सुरेंद्र वर्मा का कवि व्यक्तित्व बहुमुखी है। 'अज्ञेय' के 'नया प्रतीक' में सुरेंद्र वर्मा जी के कविताओं को स्थान मिला है जो उसके एकमात्र काव्य–संग्रह 'नया प्रतीक' से प्रस्फूटित होता है।

1.3.4 नाट्य साहित्य –

प्रयोगशील नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान निर्माण किया है। उन्होंने नाटकों के माध्यम से सामंतकालीन, उत्तर मुगलकालीन और आधुनिक आदि कालों की सामाजिक स्थितियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है।

सुरेंद्र वर्मा का नाट्य साहित्य प्रकाशन क्रम के अनुसार निम्नांकित है –

1. तीन नाटक (सन् 1972)
    1. सेतुबंध
    2. नायक खलनायक विदूषक
    3. द्रौपदी
2. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक (सन् 1975)
3. आठवाँ सर्ग (सन् 1976)
4. छोटे सैयद बड़े सैयद (सन् 1981)
5. एक दूनी एक (सन् 1987)
6. एडिथ होम
7. शकुंतला की अंगूठी (सन् 1987)
8. कैद–ए–हयात (सन् 1993)

सुरेंद्र वर्मा ने इतिहास को लेखन का विषय बनाकर मौन इतिहास को कल्पना के माध्यम से वाणी दी है। उनके नाटकों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है –

(1) तीन नाटक (सन् 1972) :–

सेतुबंध : नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में मिथकीय प्रसंगों की अपेक्षा आधुनिक जीवन में स्थित पति–पत्नी के जीवन के अलगाव और तान–तनाव को चित्रित किया है। इस नाटक के जरिए जातिवादी विचारों को तोड़ने का प्रयास किया है। साथ ही भारतीय नारी के प्रेम और श्रद्धा को व्याख्यायित किया है। इस नाटक में पुत्र के मन में अपनी माँ और उसके पुराने प्रेमी के पारस्परिक (घनिष्ट) संबंध के उद्घाटन से उत्पन्न तनाव, बेचैनी, घुटन, त्रासदी और बिखराव आदि का चित्रण किया है।

नायक खलनायक विदूषक : विदूषक का अभिनय करने वाला लोकप्रिय अभिनेता कपिंजल विदूषक की स्थिर और सपाट भूमिका करने से इनकार कर देता है। क्योंकि उसमें आत्माभिव्यक्ति और आत्मान्वेषण की संभावना बिल्कुल नहीं है। वह नायक ही नहीं, खलनायक तक की भूमिका करने को तैयार है क्योंकि उनके मतानुसार विदूषक की अपेक्षा खलनायक एक गतिशील, जीवंत और सच्चा चरित्र होता है। इसमें तीव्र नाटकीय स्थितियों का अभाव है और सारा नाटक संवाद–बहुलता से शिथिल हो गया है।

द्रौपदी : इस नाटक में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव और यांत्रिकता के कारण मानव जीवन की घुटन तनाव तथा पारस्परिक बदलते संबंधों को चित्रित किया है। साथ ही दांपत्य जीवन की घुटन, पत्नी के प्रति पति की असंतुष्टता, बच्चों की लापरवाही, उनका नैतिक अध:पतन, व्यसनाधीनता आदि के कारण संयुक्त परिवार के बनते–बिगड़ते माहौल को चित्रित किया है।

(2) सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक :–

प्रस्तुत नाटक सन् 1975 में प्रकाशित हो चुका है। इस नाटक में नपुंसकत्व के कारण नि:संतान स्त्री–पुरुष बाह्य संबंध की तलाश कर संतान प्राप्ति का

प्रयत्न, कुंठित यौन आकांक्षाएँ, नारी मूल्यों की प्रतिष्ठापना की अवधारणा की गयी है।

(3) आठवाँ सर्ग :-

यह नाटक सन् 1976 में प्रकाशित हो चुका है। नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में जाति-बिरादरी की सीमाओं को तोड़कर आधुनिक अंतर्जातीय विवाह की झलक प्रस्तुत की है।

(4) छोटे सैयद बड़े सैयद :-

प्रस्तुत नाटक सन् 1981 में प्रकाशित हो चुका है। यह नाटक अनेक वर्षों की ऐतिहासिक बोध, मानवीय नियति को समझने और सघन नाट्य क्षणों को पकड़ने वाली सूक्ष्म अंतर्दृष्टि तथा गहरे रंगमंचीय बोध का नतीजा है। ग्रीक त्रासदी-सा गरिमावान विषय की तीखी सम-सामायिकता के साथ-साथ कथानक की महाकाव्यात्मकता, जटिलता तथा गीतों का अत्यंत सार्थक प्रयोग दृष्टिगोचर हुआ है।

(5) शकुंतला की अंगूठी :-

प्रस्तुत नाटक सन् 1987 में प्रकाशित हो चुका है। ऐतिहासिक कथानक के जरिए इसमें नाटककार ने आधुनिक युवक-युवतियों के बदलते प्रेम-संबंधों को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

(6) कैद-ए-हयात :-

प्रस्तुत नाटक सन् 1993 में प्रकाशित हो चुका है। यह नाटक मिर्जा ग़ालिब के जीवन का ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है, बल्कि उनके माध्यम से प्रतीक रूप में किसी भी सम-सामायिक युग-पुरुष के बहुविध तनावों को समझाने की कोशिश है।

1.3.5 एकांकी साहित्य -

राकेश की ही परंपरा में स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर श्रेष्ठ रंग एकांकी लिखने वालों में सुरेंद्र वर्मा का नाम सर्वोपरि है। अब तक उनके प्रकाशित एकांकी का परिचय इस प्रकार है -

1. नींद क्यों रातभर नहीं आती (एकांकी संग्रह) सन् 1976-1981 ई.

1. शनिवार के दो बजे
2. वे नाक से बोलते हैं
3. हरी घास पर घंटे भर
4. मरणोपरांत
5. नींद क्यों रातभर नहीं आती
6. हिंडोल इंगूर

वर्मा जी के छः एकांकी प्रकाशित हो चुके हैं। अंतिम को छोड़कर शेष पाँचों एकांकियों में नाटककार ने मध्यवर्गीय नैतिकता और स्त्री-पुरुष संबंधों के बदलते रूपों तथा मूल्यों को विविध दृष्टिकोण से देखने-दिखाने और गहराई से विश्लेषित करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने एकांकी के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों की बहुत बारीकी से छान-बीन करते हुए अपने आस-पास के नाटकीय जीवन को प्रस्तुत किया है। साथ ही उन्होंने अपने एकांकियों के मूल में ज्यादातर मध्यवर्गीय परिवारों की सामाजिक, आर्थिक एवं दांपत्य जीवन संबंधी समस्याओं को चित्रित किया है। एकांकी में वर्णनात्मकता की अपेक्षा अभिनयात्मकता की प्रधानता ज्यादा मात्रा में दिखाई देती है। 'नींद क्यों रातभर नहीं आती' एकांकी में आधुनिक शिक्षित किशोरियों को आधुनिक समाज के अनुकूल जीवन जीने के लिए यौन-समस्या का सामना करना पड़ रहा है इसी तथ्य को रेखांकित किया है।

1.3.6 व्यंग्य साहित्य -

1. जहाँ बारिश न हो

1.3.7 रूपांतर साहित्य -

1. बिल्ली चली पहनकर जूते

1.3.8 विवेचन -

1. मैटा फिसिकल फाउण्डेशन ओव महात्मा गाँधीज थोट

1.3.9 अन्य साहित्य –

सुरेंद्र वर्मा ने अपने साहित्यिक जीवन में उपन्यास, नाटक, एकांकी के अतिरिक्त भी कुछ अन्य रचनाएँ लिखी हैं किंतु इसकी संख्या अत्यल्प है। वे अच्छे समीक्षक भी हैं। उनका 'नटरंग', 'कल्पना', 'आजकल' तथा 'प्रकर' आदि पत्र-पत्रिकाओं में अनेक प्रकार का लेखन साहित्य प्रकाशित हो चुका है। 'सुभाष देशोत्तर का मृत्युबोध' और 'देवराज' के काव्य में मानवतावादी दृष्टि आदि समीक्षात्मक लेखों में उनका समीक्षक रूप उभर आता है। उन्होंने कई फुटकल कहानियाँ लिखी हैं जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। गांधी जी के विचारों पर ग्रंथ तथा नीतिशास्त्र पर पुस्तक आदि साहित्यिक विधा में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

निष्कर्ष :

सुरेंद्र वर्मा जी का व्यक्तित्व और कृतित्व अपनी जीवन यात्रा के विविध पहलुओं से गुजरता हुआ परिलक्षित होता है। समकालीन साहित्यकारों या उपन्यासकारों की रचनाओं में जो नारी का चित्रण हुआ है, आज आप बीती है, वर्मा जी का रचना संसार इसका प्रतीक है। वर्मा जी का व्यक्तित्व उच्चकोटि का दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने हिंदी साहित्य संसार को उच्चकोटि की वैविध्यपूर्ण तथा सारगर्भित रचनाएँ प्रदान की है। इसी तरह वर्मा जी ने लेखक के रूप में अलग पहचान बनायी है। नारी स्वतंत्रता के समर्थक होने के कारण नारी मन को बड़ी चतुराई और न्यायपूर्णता से अपने साहित्य में आंका है। वर्मा जी प्रतिभासंपन्न और स्पष्टवादी साहित्यकार हैं। उनका अधिकतर समय नगरों, महानगरों में बीता है। इसी कारण उनके साहित्य में ज्यादातर महानगरीय जीवन का चित्रण दिखाई देता है। एक सशक्त उपन्यासकार और नाटककार के रूप में जाने जानेवाले वर्मा जी आत्म-प्रचार से रहित हैं। उनकी परिश्रमवृत्ति, आत्मविश्वास से परिपूर्ण महत्त्वाकांक्षी वृत्ति का असर उनके साहित्य रचनाओं में दिखाई देता है। जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं ने उनके जीवन के आंतरिक पक्ष को समृद्ध बनाया है, इसी तरह वर्मा जी एक सृजनशील साहित्यकार हैं। युगीन यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रयुक्त किया है।

वर्मा जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में नारी स्थिति एवं समस्या का चित्रण किया है । उन्होंने कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, एकांकी, व्यंग्य आदि विधाओं में भी लेखन किया है। उनका समस्त रचना साहित्य जीवन की वास्तविकता और आदर्शवादिता की नींव पर खड़ा है। अपने साहित्य में चित्रित चरित्रों के माध्यम से उन्होंने समाज के सामने मानवीय जीवन के आदर्श रूप को रखने का प्रयास किया है। इसलिए उनका साहित्य जनप्रिय हुआ है। पुरुष होते हुए भी उनके साहित्य के केंद्र में ज्यादातर नारी चित्रण दिखाई देता है। वर्मा जी स्त्री-पुरुष समानता के पक्षधर हैं। उनके साहित्य में यौन सुख की चाह का चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है। उनके साहित्य से स्पष्ट होता है कि वे बंधन को नहीं मानते। उनके साहित्य में जीवन की अनेक समस्याओं का और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सबसे ज्वलंत एवं संवेदनशील प्रश्न उठाएँ हैं और उसे यथार्थ की अधिकतम संभावनाओं के बीच सतर्कता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य की भाषा अत्यंत प्रवाही है। उनका साहित्य अनुभूति से ओत-प्रोत होने के कारण उसे बहुत प्रसिद्धि मिली है। जिससे उनके बहुआयामी सृजनशीलता का परिचय प्राप्त होता है। उनके कृतियों को यथोचित सम्मान भी मिला। पुरस्कारों के साथ-साथ जनप्रियता-पाठकों की प्रशंसा भी पाने में वर्मा जी सफल रहे हैं। क्योंकि आज अनुसंधान के क्षेत्र में उस पर शोध कार्य चल रहा है। यही इसका प्रमाण है।

❑❑❑❑